ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र

जून 2018 (प्रथम)

प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर विशेषांक

Email : aryapsharyana@yahoo.in

Visit us : www.apsharyana.org

प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर के उद्घाटन समारोह में मंच को सुशोभित करते हुए आचार्य देवव्रत जी, श्री मनीष ग्रोवर, स्वामी धर्मदेव व आचार्य सर्वमित्र आर्य।

प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर के उद्घाटन समारोह में 4 रथों की चाबी भेंट करते हुए आचार्य देवव्रत जी।

ध्वजारोहण के साथ प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर का उद्घाटन करते हुए मुख्यातिथि।

प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर के उद्घाटन समारोह में स्वामी देवव्रत (संचालक, आर्य वीर दल) को सम्मानित करते हुए सभा पदाधिकारी।

प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर के उद्घाटन समारोह में आचार्य देवव्रत जी (राज्यपाल हि. प्र.) को सम्मानित करते हुए सभा पदाधिकारी।

प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर के उद्घाटन समारोह में मनीष ग्रोवर (सहकारिता मंत्री, हरियाणा सरकार) को सम्मानित करते हुए सभा पदाधिकारी।

प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर के उद्घाटन समारोह में एन. एम. डी. सी. प्रतिनिधि को सम्मानित करते हुए सभा पदाधिकारी।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,119
विक्रम संवत् 2075
दयानन्दाब्द 195

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 14 अंक 9

सम्पादक :
उमेद शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993, 7082783793

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

जून, 2018 (प्रथम)

1 से 15 जून, 2018 तक

इस अंक में....

1. जिज्ञासा-विमर्श (वेद) 2
2. सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी 4
3. आर्यसमाज के नियमों की संक्षिप्त व्याख्या 6
4. योग : मन की पवित्रता का मार्ग 7
5. प्रेरक वचन 7
6. मौत के दर्शन एवं विचार 8
7. पंजाब में आर्यसमाज 10
8. अदृश्य बन्धन 11
9. श्री सुभाष जी को पितृशोक 12
10. समाचार-प्रभाग 13

सूचना

सभी आर्यसमाजों को, आर्य शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि अपने सभी प्रकार के प्रचार कार्यक्रमों का विवरण 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका में छापने के लिए भेजें। साथ ही विद्वानों, लेखकों, बुद्धिजीवियों से आग्रह है कि वे अपने लेख, कविता आदि निम्न ई-मेल अथवा पते पर भेजें।

सम्पादक 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001
E-mail : aryapsharyana@yahoo.in
Website : www.apsharyana.org

जिज्ञासा-विमर्श (वेद)

❑ आचार्य सोमदेव, ऋषि उद्यान, अजमेर

गतांक से आगे....

जिज्ञासा-3. हम वेदमन्त्रों को पढ़ते हैं। उनके अर्थ भावार्थ भी पढ़ते हैं, परन्तु हमें यह पता नहीं चलता कि इस वेदमन्त्र का ऋषि कौन है, देवता कौन है, छन्द कौन-सा है? इसका ज्ञान नहीं है। आपसे प्रार्थना है कि गायत्री मन्त्र का छन्द तो गायत्री है, परन्तु इसका ऋषि व देवता और छन्द भी बता देवें। मन्त्र का ऋषि व देवता वेदमन्त्र में ही होता है, परन्तु हमें पता नहीं चलता-इसका भी ज्ञान दे दें।

-देवराज आर्यमित्र, डब्ल्यू. जेड.-428, हरिनगर, नई दिल्ली-64

समाधान-वेदमन्त्र के छन्द, देवता, ऋषि प्राय: वेद संहिताओं अथवा वेदभाष्यों में उपलब्ध होते हैं, उससे इनका ज्ञान किया जा सकता है। देवता और ऋषि अर्थात् मन्त्र का विषय और उस मन्त्र को साक्षात् करने वाला-ये वेद संहिता में सूक्त अथवा अध्याय का प्रारम्भ होने से पहले मिलते हैं। मन्त्र का देवता प्राय: मन्त्र में मिल जाता है-अनेक बार सीधे-सीधे शब्दों में अथवा उसके पर्यायवाची शब्दों के द्वारा। आपने लिखा, ''ऋषि और देवता वेदमन्त्र में ही होता है।'' सो ठीक नहीं, क्योंकि देवता तो मन्त्र में होता है, किन्तु ऋषि मन्त्र में नहीं होता। ऋषि तो उस मन्त्र के अर्थ का द्रष्टा होता है, उस द्रष्टा ऋषि का नाम मन्त्र के साथ इतिहास की दृष्टि से लिखा आ रहा है कि प्रथम बार इस नाम के ऋषि ने अमुक मन्त्र को साक्षात् किया था। अनेक मन्त्रों में ऋषि का नाम दिखता है, यथार्थ में वह नाम उस ऋषि का वास्तविक नाम नहीं होता, अपितु उस मन्त्र का साक्षात् करने के कारण गौणिक नाम होता है। उस गौणिक नाम को देखकर कुछ लोग मानते हैं कि मन्त्र में ही ऋषि होता है, सो उचित नहीं है। छन्द ज्ञान के लिए तो छन्द शास्त्र को पढ़ना-जानना पड़ेगा, तभी छन्द को जान पायेंगे। गायत्री मन्त्र वेद में अनेक स्थान पर आया है। इस मन्त्र का सविता देवता और निचृद् गायत्री छन्द सब स्थान पर एक जैसा है। ऋषि भिन्न हैं-यजु० 36.3 व 3.35 का ऋषि विश्वामित्र और यजु० 30.2 का ऋषि नारायण है। ऐसे ही विश्वानिदेव मन्त्र का देवता सविता और छन्द गायत्री है, किन्तु ऋषि इसके भी भिन्न-भिन्न हैं। यजु० 30.3 का विश्वामित्र और ऋ० 5.82.5 का श्यावाश्वात्रेय ऋषि है।

जिज्ञासा 4. (क) कृपया, सामवेद का सन्दर्भ ग्रहण करने की कृपा करें। मेरी शंका है कि सामवेद में अनेक मन्त्र ऐसे हैं जो कि दो बार छपे हैं। क्या मन्त्रों की संख्या बढ़ाने का उद्देश्य रहा है या कोई और कारण? उदाहरण के लिये-

मन्त्र संख्या 1113 - यही मन्त्र (ऋषि व देवता भी वही) मन्त्र संख्या 446 पर है।

मन्त्र संख्या 1114 - यही मन्त्र (ऋषि व देवता भी वही) मन्त्र संख्या 445 पर है।

मन्त्र संख्या 1115 - यही मन्त्र (ऋषि व देवता भी वही) मन्त्र संख्या 444 पर है।

मन्त्र संख्या 1116 - यही मन्त्र (ऋषि व देवता भी वही) मन्त्र संख्या 524 पर है।

मन्त्र संख्या 1117 - यह मन्त्र पुन: 498 पर है।

मन्त्र संख्या 1140 - यह मन्त्र पुन: 67 पर है।

मन्त्र संख्या 1152 - यह मन्त्र पुन: 557 पर है।

आखिर क्या कारण है कि एक ही ऋषि, एक ही देवता आदि दो-दो बार वेद में आए हैं। स्पष्ट करने की कृपा करें।

(ख) प्रत्येक वेद में मन्त्र के साथ उसका ऋषि, देवता, छन्द, स्वर आदि दिया गया है तथा वेदभाष्य कर्त्ता का नाम वेद के साथ दिया गया है, किन्तु ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद में मुझे किसी ऋषि-अग्नि, अंगिरा, आदित्य या वायु नाम नहीं लिखा हुआ दिखा, जबकि उन्हीं ऋषियों को वेदज्ञान ईश्वर ने प्रदत्त किया।

सर्व साधारण के ज्ञान के लिये प्रत्येक वेद के साथ उसके द्रष्टा ऋषि का नाम अवश्य ही वेद पर मोटे अक्षरों में दिया जाना चाहिये।

मेरी भूल भी हो सकती है कि मेरी समझ में न आ पाई हो। कृपया सुधार कर ज्ञान प्रदान करें।

-कृष्ण गोपाल, मन्त्री, आर्यसमाज टनकपुर, चम्पावत, उत्तराखण्ड

समाधान-(क) परमेश्वर के द्वारा किया गया वेदोपदेश हम जीवात्माओं के लिए परम प्रमाण है। ऋषियों ने वेद को स्वत: प्रमाण कहा है। वेद का प्रत्येक मन्त्र, प्रत्येक पाद, प्रत्येक शब्द सार्थक है, सप्रयोजन है, विशेष आशय को लिए हुए है।

वैदिक संहिताओं का अध्ययन करते हुए कई अन्य समस्याओं के समान पुनरुक्त की समस्या भी हमारे सामने आती है। जब एक मन्त्र को एक ही वेद में एक से अधिक बार आया हुआ देखते हैं या उस मन्त्र को अन्य वेदों में भी पाते हैं तो स्वभावत: हमारे मन में यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि ऐसा क्यों है और अनेक लोग इसको पुनरुक्त दोष समझने लगते हैं। ऐसा ही आशय आपका भी प्रतीत हो रहा है।

'वेदों में पुनरुक्त दोष नहीं है' इस विषय पर विद्वानों ने बहुत लिखा है। उन्हीं विद्वानों के आधार पर हम यहाँ कुछ लिखते हैं।

वेदों में पुनर्कथन के कई प्रकार हैं। जैसे-(1) कहीं-कहीं सम्पूर्ण सूक्त का पुनर्कथन हुआ है। जैसे-ऋग्वेद का 10.10 यम-यमी सूक्त कहलाता है। यह सम्पूर्ण सूक्त अथर्ववेद 18.1 में भी है। ऋग्वेद का 10.154 के पांच मन्त्र भाववृत्त सूक्त है, यह बहुत कम परिवर्तन के साथ अथर्ववेद 18.2 में भी आया है। ऋग्वेद का 10.95 सोम सूर्या सूक्त या विवाह सूक्त के नाम से प्रसिद्ध है, यह सम्पूर्ण सूक्त थोड़े से क्रमादि भेद के साथ अथर्ववेद 14.1 में आया है। ऋग्वेद का पुरुष सूक्त 10.90 कुछ परिवर्तन के साथ यजुर्वेद अध्याय 31 तथा अथर्ववेद 19.6 में भी है और इसके कुछ मन्त्र सामवेद में पूर्वार्चिक के आरण्य पर्व में भी हैं। इसी प्रकार कुछ अन्य सूक्त भी हो सकते हैं।

(2) कहीं-कहीं पूरा सूक्त पुनरुक्त न होकर उसके 2, 3 या अधिक मन्त्र उसी क्रम से उसी वेद में या अन्य वेदों में आये हैं। जैसे ऋग्वेद के 4.31 के पहले तीन मन्त्र-

कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृध: सखा।
कया शचिष्ठया वृता॥ 1॥
कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धस:।
दृळ्हा चिदारुजे वसु॥ 2॥
अभी षु ण: सखीनाममविता जरितर्षिणाम्।
शतं भवास्यूतिभि: ॥ 3॥

इसी क्रम से यजुर्वेद में अध्याय 27.39-41, अध्याय 36.4-6 दो स्थानों पर हैं। सामवेद में उत्तरार्चिक, प्रथम प्रपाठक के तृतीय खण्ड में और अथर्ववेद में काण्ड 20 सूक्त 124.1-3 में आये हैं।

(3) कहीं अकेला एक मन्त्र ही पुनरुक्त हुआ है, जैसे-**तत् सवितुर्वरेण्यम्** आदि। यह मन्त्र गायत्री मन्त्र नाम से प्रसिद्ध है। यह मन्त्र ऋग्वेद और सामवेद में एक-एक बार और यजुर्वेद में तीन बार आया है। ऋ० 3.62.10, यजु० 3.35, 22.9, 30.2, साम० उ.प्र. 6.6.3। यदि यजुर्वेद के 36.3 को भी गिन लें तो यह मन्त्र यजुर्वेद में चार बार आया है। वहां पर **भूर्भुव: स्व:** अधिक पढ़ा गया है। ऐसे पुनरुक्त मन्त्र बहुत अधिक मात्रा में हैं।

(4) कहीं पूरा मन्त्र पुनरुक्त न होकर उसका कुछ अंश पुनरुक्त होता है। यह अंश तीन चरण, दो चरण, एक चरण, एक चरण से कम और एक, दो या तीन चरणों से अधिक भी हो सकता है। जैसे-1.29.1

यच्चिद्धि सत्य सोमपा अनाशस्ता इव स्मसि।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ॥

इस मन्त्र का उत्तरार्ध इस सूक्त के सातों मन्त्रों में आया है। ऋग्वेद 1.97वें सूक्त में प्रत्येक मन्त्र में **'अप न: शोशुचदघम्'** की आवृत्ति हुई। ऐसी ही अन्य स्थलों पर भी पुनरावृत्ति मिलती है।

(5) एक ही भाव अनेक बार पुनरुक्त हुआ है, भले भाषा भिन्न हो। जैसे इन्द्र वृत्रों का संहारक, ऐश्वर्यशाली, बहुत दानी और सोमरस का पीने वाला है, अग्निदेवों का दूत, ज्योतिष्मान्, हवि का भक्षण करने वाला एवं दाश्वान का हित करने वाला है, उषा द्युलोक की पुत्री, ज्योतिष्मती तथा अन्धकार को उच्छिन्न करने वाली है, इत्यादि भाव वेदों में बार-बार आते हैं। कोई कह सकता है कि एक भाव को एक ही बार कहना पर्याप्त था।

इस प्रकार की पुनरुक्तियाँ वेद में दृष्टिगोचर होती हैं। ये पुनरुक्तियाँ सर्वथा दोषरहित हैं। बिना प्रयोजन के निरर्थक पुनरुक्ति दोषपूर्ण मानी जाती है, किन्तु प्रयोजन युक्त सार्थक पुनरुक्ति दोषपूर्ण नहीं मानी जाती। वेद में जो भी पुनर्वचन मिलते हैं, वे सभी प्रयोजन युक्त और सार्थक हैं।

क्रमश: अगले अंक में....

विषय में थे, सो पोपों ने अपने पर घटा लिये और झूठे-झूठे वचनयुक्त ग्रन्थ रचकर उनमें ऋषि-मुनियों के नाम धर के उन्हीं के नाम से सुनाते रहे। उन प्रतिष्ठित ऋषि-महर्षियों के नाम से अपने पर से दण्ड की व्यवस्था उठवा दी। पुनः यथेष्टाचार करने लगे, अर्थात् ऐसे कड़े नियम चलाये कि उन पोपों की आज्ञा बिना सोना, उठना-बैठना, आना-जाना, खाना-पीना आदि भी नहीं कर सकते थे। राजाओं को ऐसा निश्चय कराया कि पोप-संज्ञक कहने मात्र के ब्राह्मण साधु चाहे सो करें, उनको कभी दण्ड न देना अर्थात् उन पर मन में दण्ड देने की इच्छा भी न करनी चाहिए। जब ऐसी मूर्खता हुई तब जैसी पोपों की इच्छा हुई वैसा करने-कराने लगे।

प्रश्न 761. जब उत्तम उपदेशक होते हैं तब क्या होता है?

उत्तर-तब अच्छे प्रकार धर्म; अर्थ, काम और मोक्ष सिद्ध होते हैं। तब अन्ध-परम्परा नष्ट होकर प्रकाश=ज्ञान की परम्परा चलती है।

प्रश्न 762. जब उत्तम उपदेशक और श्रोता नहीं रहते तब क्या होता है?

उत्तर-तब अन्ध परम्परा चल पड़ती है। वे पोप लोग अपनी और अपने चरणों की पूजा कराने लगते हैं और इसी में ही उनका कल्याण मानते हैं। जब लोग इनके वश में हो जाते थे तब प्रमाद और विषयासक्ति में निमग्न होकर गडरियों के समान झूठे गुरु बनकर चेलों को फँसा लेते थे। पश्चात् विषयासक्त होकर मद्य-मांस का सेवन गुपचुप करने लगे और नए वाममार्ग खड़े हो गए।

प्रश्न 763. वाममार्गियों ने वासना का कैसा स्वरूप प्रस्तुत किया है?

उत्तर-जिन स्त्रियों को छूना नहीं उनको अतिपवित्र उन्होंने माना है। जैसे शास्त्रों में रजस्वला आदि के स्पर्श का निषेध है, उनको वाममार्गियों ने अति पवित्र माना है। रजस्वला के साथ समागम करने से जानो पुष्कर का स्नान, चाण्डाली से समागम में काशी की यात्रा, चमारी से समागम करने से मानो प्रयागस्नान, धोबी की स्त्री के साथ समागम करने में मथुरा यात्रा और कंजरी के साथ लीला करने से मानो अयोध्या तीर्थ कर आए। मद्य का नाम धरा 'तीर्थ', मांस का नाम 'शुद्धि' और 'पुष्प', मच्छी का नाम 'तृतीया' और 'जलतुम्बी', मुद्रा का नाम 'चतुर्थी' और मैथुन का नाम 'पंचमी' है। इसलिए ऐसे-ऐसे नाम धरे हैं कि जिससे दूसरा न समझ सके। अपने कौल, आर्द्र, वीर, शाम्भव और गण आदि नाम रखे हैं और जो वाममार्ग मत में नहीं हैं, उनका 'कण्टक', 'विमुख', 'शुष्कपशु' आदि नाम धरे हैं।

प्रश्न 764. वामवार्गियों का भैरवीचक्र कैसा है?

उत्तर-जब भैरवीचक्र हो तब उसमें ब्राह्मण से लेकर चाण्डालपर्यन्त का नाम द्विज हो जाता है, जब भैरवीचक्र से अलग हों तब सब अपने-अपने वर्णस्थ हो जायें। भैरवीचक्र में वाममार्गी लोग भूमि वा पट्टे पर एक बिन्दु त्रिकोण, चतुष्कोण, वतुलाकार बनाकर उस पर मद्य का घड़ा रख के उसकी पूजा करते हैं। फिर ऐसा मन्त्र पढ़ते हैं-'**ब्रह्मशापं विमोचथ**'= हे मद्य! तू ब्रह्मा आदि के शाप से रहित हो। एक गुप्त स्थान में कि जहाँ सिवाय वाममार्गी के दूसरे को नहीं आने देते, वहाँ स्त्री और पुरुष इकट्ठे होते हैं। वहाँ पुरुष एक स्त्री को नंगा कर पूजते और स्त्री लोग किसी पुरुष को नंगा कर पूजती हैं। पुनः कोई किसी की स्त्री, कोई अपनी वा दूसरे की कन्या, कोई किसी की वा अपनी माता, भगिनी, पुत्रवधू आदि आती हैं। पश्चात् एक पात्र में मद्य भरके मांस और 'बड़े' आदि एक थाली में धर रखते हैं। उस मद्य के प्याले को, जो कि उनका आचार्य होता है, वह हाथ में लेकर बोलता है कि 'भैरवोऽहम्, शिवोऽहम्' मैं भैरव वा शिव हूँ, कहकर पी जाता है। फिर उसी जूठे पात्र से सब पीते हैं। और जब किसी की स्त्री वा वेश्या को नंगी कर अथवा किसी पुरुष को नंगा कर हाथ में तलवार देके उसका नाम देवी और पुरुष का नाम महादेव धरते हैं, उसके उपस्थ इन्द्रिय की पूजा करते हैं। तब उस देवी या शिव के मद्य का प्याला पिलाकर उसी जूठे पात्र से सब लोग एक-एक प्याला पीते। फिर उसी प्रकार क्रम से पी-पी के उन्मत्त होकर चाहे कोई किसी की बहिन, कन्या वा माता क्यों न हो, जिसकी जिसके साथ इच्छा हो, उसके साथ कुकर्म करते हैं। किसी-किसी को वहीं वमन होता है। उनमें जो पहुंचा हुआ 'अघोरी' अर्थात् सब में सिद्ध गिना जाता है, वह वमन हुई चीज को भी खा लेता है।

क्रमशः अगले अंक में....

आर्यसमाज के नियमों की संक्षिप्त व्याख्या

❑ जगरूपसिंह छिक्कार, स्पेज परिवी सेक्टर-72 बी-103 फ्लोवर-10, गुरुग्राम-122001 (हरयाणा)

1. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

व्याख्या-वेद का दाता प्रभु सृष्टि का कर्त्ता, धर्त्ता, सर्वनियन्ता और संहारक है। प्रभु ने यह सृष्टि जीव के भोग और मोक्ष के लिए ही रची है। ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों अनादि हैं। इन तीनों पदार्थों के सत्य ज्ञान को तत्त्वज्ञान कहते हैं। इसी को त्रैतवाद कहते हैं।

ज्ञान का तात्पर्य अनात्म और आत्म वस्तुओं का ज्ञान है। विज्ञान-सृष्टि-उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय, मानव सृष्टि तथा सृष्टिक्रम है। इस तत्त्वज्ञान को पृथक्-पृथक् खूब अच्छी प्रकार से समझकर विवेकी बनो और दूसरों को भी मनुष्य बनाओ। किन्तु इन्द्रियों का विषयों की आसक्ति से मुक्त होना बड़ा ही कठिन है। अत एव इन्द्रियां ठहरीं कभी न सुलझने वाली दृढ़ ग्रन्थियां जन्म परम्परा रूपी चमड़े की रस्सी में बंधी हुई साथ लगी चली आती हैं।

सूक्ष्म बुद्धि से देखा जाये तो इन्द्रियों के विषयाचरण पानी की धारा के साथ तैरने के समान हैं। केवल शरीर साधना आनी चाहिये, शेष बहाने का काम तो पानी का प्रवाह स्वत: कर देगा। विचार यदि परिपक्व हों तो कोई भी कठिनाई बाधा नहीं हो सकती। अत: सूक्ष्म शरीर को अत्यन्त पवित्र बनाने की आवश्यकता है। वेदज्ञान की मर्यादाओं का कठोरता से पालन करती हुई चेतन आत्माएं लक्ष्य की ओर बढ़ जाती हैं।

2. ईश्वर, सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

व्याख्या-प्रभु का शुद्ध स्वरूप समझे बिना दु:खों से छुटकारा भी संभव नहीं है। मनुष्य शरीर मिलने पर भी छह प्रकार की पशुता हमारे साथ लगी चली आती है। वह है-काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य। इन बुराइयों से छुटकारा पाने पर ही शरीर में मानवता का जन्म होता है। किन्तु इनसे छुटकारा पाना सरल काम नहीं है। मन यदि विकारी न हो, विषयों का ध्यान न करे तो ये विषय मनुष्य के पास आ ही नहीं सकते। धर्म मार्ग में चलने वाला मनुष्य अपने द्वेषादि दुर्गुणों को इस प्रकार नष्ट करता है, जैसे सूर्य अन्धकार का नाश कर डालता है। ईश्वर से अति प्रेम करना और उसके स्मरण करने का अर्थ है-वेदमार्ग में प्रत्येक काम को पवित्रतापूर्वक मर्यादाओं की रक्षा करते हुए करना चाहिए। इसी का नाम 'तप' है। तप और दीक्षा की भट्ठी में तपे हुए व्यक्ति ही वास्तव में मनुष्य बनते हैं। इसलिए मानवता की सार्थकता निष्पाप जीवन जीने में है। अत: हमें केवल प्रभु की ही श्रद्धापूर्वक उपासना करनी चाहिये। अन्य की भक्ति क़रने से मनुष्य पाप और पीड़ा के कुएं में फंस जाता है। श्रद्धा और भावना का आधार है, सत्य। श्रद्धा शब्द दो शब्दों के मेल से बना है-श्रत्=धा, श्रत् का अर्थ है सत्य और धा का अर्थ है धारण करना, अर्थात् पहले ऊहापोह से सत्य को जानो फिर धा-धारण करो, ज्ञान क्रिया को आचरण में लाने से ही श्रद्धा का शरीर में जन्म होता है। इसलिए प्रभु ने अनृत (मिथ्या) को अश्रद्धा के साथ जोड़ा है और श्रद्धा को सत्य के साथ। अत: अभ्यास और वैराग्य से मन के पवित्र होने पर निर्मल हृदय-मन्दिर में उसके दर्शन होते हैं।

3. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

व्याख्या-इस नियम में बताया गया है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है, प्रभु की निज वाणी है। जो कुछ सत्य है, वही त्रीय विद्या (चार वेद) हैं। ज्ञान, कर्म, उपासना एवं विज्ञान के भेद से वेदज्ञान चार नामों से पुकारा जाता है। वेद संसार में विज्ञान के सागर हैं। वेद में 20416 मन्त्र हैं। वेदमन्त्रों में प्रभु अपना उपदेश दे रहे हैं। परमात्मा के विचार को 'मन्त्र' कहते हैं। वेद ज्ञान के संदेशवाहक हैं, धर्मात्मा, योगी, ऋषि-मुनि और ब्रह्मचारी। वेदों का सार सुनो और सुनकर उसे आचरण में लाओ। 'वेदों का मुख्य तात्पर्य प्रभु को प्राप्त कराने और प्रतिपादन करने में है।'

क्रमश:....

योग : मन की पवित्रता का मार्ग

❑ डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह, चन्द्रलोक कॉलोनी, खुर्जा, मो० 8979794715

मानव को मानव बनाने का मार्ग वैदिक धर्म है और यह धर्म किसी विशेष समुदाय, वर्ग, सम्प्रदाय से नहीं बंधा है इसमें तो समस्त विश्व के कल्याण का ज्ञान है। **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'** की भावना है, आज योग विश्व का

विषय है, 21 जून अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस है। आज सम्पूर्ण विश्व योग व योगाभ्यास की ओर चल रहा है, योग मनुष्य का जीवन है, मनुष्य के स्वास्थ्य निर्माण का साधन है, चंचल चित्तवृत्तियों को नियंत्रित करने का मार्ग है और आज के व्यस्ततम जीवन में आवश्यक है।

योग के आठ अङ्ग हैं। आठ में से हम एक का भी पालन कर लें तो विश्व ही श्रेष्ठ हो जाये। इनको अष्टाङ्ग योग कहते हैं। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समाधि यह आठ योग के अंग हैं। उदाहरणतः पहला अंग ही ले लें, वह है यम, यम के भी अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह उपाङ्ग हैं। इसमें अहिंसा का अर्थ है किसी को शरीर, मन, वाणी से भी दुःख न पहुँचाना। शरीर से चोट पहुँचाई जा सकती है, मन में दूसरों के प्रति ईर्ष्या-द्वेष आदि वाणी से कटु बोलना बुरी बात कह देना हिंसा है, आज मनुष्य सामान्य जीवन में इनका व्यवहार ही अधिक करता है। यम का प्रथम भाग ही है संसार में इसका पालन ही करने लगे तो संसार श्रेष्ठ हो जायेगा। आज मानव मानव का शत्रु हो रहा है। वह शरीर से बुरे काम करता है, चारों ओर अपराधों की भरमार है। समाचार-पत्र, इंटरनेट, टी.वी., सर्वत्र बलात्कार, हत्या, चोरी, दहेजहत्या के समाचार आते रहते हैं, यह सब पाप है जो नहीं करने चाहिएं।

ऐसे ही सत्य है, सत्य बोलने लगें, सत्याचरण ही करें, जो जैसा है उसे वैसा ही माने, ईश्वर को छोड़कर जड़ की पूजा करना वेदविरुद्ध है। ईश्वर को अवतार लेने वाला मानना वेदविरुद्ध है। न ही वह एकदेशीय है। भूत-प्रेत, जादू-टोना, कब्रपूजा, मूर्तिपूजा (जड़पूजा) वेदविरुद्ध व सामाजिक कुरीतियां हैं। यह विषय ही बहुत बड़ा है। इसका ही सत्य रूप से पालन करें तो हम अपने जीवन से सभी बुराइयां छोड़ देंगे। सदा सत्य ही बोलेंगे, कहीं अन्याय नहीं करेंगे, पक्षपात नहीं करेंगे, झूठ नहीं बोलेंगे, सात्त्विक भावना होगी, मन शुद्ध व पवित्र निर्मल रहेगा।

योग का अर्थ ही चित्तवृत्तियों पर नियन्त्रण है, अपने मन पर नियंत्रण है, इन्द्रियों को धर्म के विषय में लगाना है, अधर्म नहीं करना है। हम ऐसा विचार करके ही तो श्रेष्ठ बनेंगे और संसार का भी श्रेष्ठ निर्माण करेंगे।

योग करें, परिवारी जनों के साथ करें, समस्त समाज के साथ करें, घर व विद्यालयों में करें। समाज को श्रेष्ठ बनाएं, योग को अपनाएं। योग ही हमारा जीवन है, जीवन की रक्षा का आधार है, शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य का मार्ग है।

प्रेरक वचन

- वह परिवर्तन बनें जो आप संसार में देखना चाहते हैं।
- जब आप कोई काम चुनते हैं तो आप उसके परिणाम भी चुनते हैं।

- अगर आपको इन्द्रधनुष चाहिये तो बारिश भी झेलनी पड़ेगी।
- जो इंतजार करता है उसके पास हर चीज आती है।
- जो गहरे पानी में डुबकी लगाता है उसे ही मोती मिलती है।
- आपके निर्णय के पलों में ही आपकी तकदीर आकार लेती है।
- ऐसा कोई दुःख नहीं है जो समय के साथ कम न हो।
- इंसान की सच्ची दौलत चेतना है।
- धन का प्रेम ही सारी बुराइयों की जड़ है।
- सुख में दुःख का दर्शन दुःख का अन्त करने में समर्थ है।
- आत्मसम्मान परम धन है।
- राग रहित हो जाना परम निर्दोषता है।

—भलेराम आर्य, गांव सांघी (रोहतक)

मौत के दर्शन एवं विचार

❑ सूबेदार करतारसिंह आर्य, सेवक आर्यसमाज गोहानामण्डी (सोनीपत)

एक बार जंगल में तपस्या कर रहे एक साधु के पास तीन डाकू पहुँचे और उन्होंने साधु से कहा-हे मुनिवर! हम मौत के दर्शन करना चाहते हैं। क्या आप बता सकेंगे कि मौत कहाँ पर है?

साधु ने कुछ देर सोचा और फिर डाकुओं से बोले-मेरे पीछे आओ। वह तीनों डाकू साधु के पीछे-पीछे चल

दिए। कुछ देर बार साधु ने उनको रुकने का इशारा किया और बोले-'वह सामने जो एक गुफा दिखाई दे रही है, उसी में मौत है। जाओ और जाकर दर्शन करो।' मौत के इतना सुनते ही तीनों डाकू उस गुफा में प्रविष्ट हो गये। गुफा में थोड़ी दूर चलने के बाद उन्हें कई सिक्कों से भरे बरतन दिखाई दिये।

एक डाकू बोला-साधु ने कहा था कि इस गुफा में मौत है, लेकिन तब दूसरा बोला-''मौत का दर्शन तो हम बाद में कर लेंगे, पहले यह खजाना ले चलने की तैयारी करो।'' तीनों ने सारा धन थैली में भरकर रख लिया और तीनों ने विचार किया कि दिन में माल ले जाना ठीक नहीं है। रात को माल ले जाना ठीक होगा। फिलहाल रात आने तक आराम कर लें। तीनों में से एक डाकू खाना व शराब लेने चला गया। शेष दोनों खजाने की रक्षा में बैठ गये। खाली दिमाग शैतान का घर होता है। तीनों अलग-अलग सोचने लगे कि अगर मैं शेष दोनों को खत्म कर दूं तो सारा खजाना मेरा हो जाएगा। यह सोचकर खाना व शराब लेने गये डाकू ने खाने और शराब में जहर मिला दिया। इधर दोनों डाकू जो खजाने के पास बैठे थे मौका मिलते ही एक दूसरे को खत्म करने का फैसला कर लिया और मौका मिलते ही एक डाकू ने सामने बैठे डाकू पर हमला बोल दिया। उसका सिर काट डाला। अब वह गुफा के द्वार पर खड़ा हो गया ताकि अपने तीसरे साथी को खत्म कर दे। जैसे ही वह तीसरा साथी गुफा में घुसा उस डाकू ने उसका भी सिर एक ही बार में धड़ से अलग कर डाला।

अब वह बहुत खुश था क्योंकि वह सारे खजाने का मालिक था। अचानक उसकी नजर तीसरे साथी के लाए खाने व शराब पर पड़ी। उसने सोचा कि भूख तो लग रही है, पहले खाना खा लिया जाये। खाना खाने के थोड़ी देर बाद वह भी बेजान होकर भूमि पर गिर पड़ा, क्योंकि खाने में जहर मिला था।

सार-साधु ने सच ही कहा था कि गुफा में मौत है। बिना परिश्रम किये दौलत को प्राप्त करने वाला यह नहीं जानता कि यही दौलत उसकी मौत का कारण भी बन सकती है।

लोभ सभी मानसिक रोगों की जड़ मानी गई है। समस्त पापों की जड़ लोभ को कहा गया है। पाप का बाप लोभ कहलाता है। लोभ का पेट कभी भरता नहीं है। ज्यों-ज्यों धन-सम्पदा सुख के भोग के साधन सुविधाएं आदि बढ़ती जाती हैं, त्यों-त्यों मन लोभी और लालची होता जाता है। धन का लोभ पाप अधर्म, भ्रष्टाचार आदि का सबसे बड़ा कारण है। लोभ इंसान को अंधा बना देता है। आवश्यकता से अधिक धन के कारण आदमी में अहंकार पैदा हो जाता है। लोभी आदमी कभी परोपकार का काम नहीं कर सकता। इंसानियत की गिरावट का सबसे बड़ा कारण अहंकार है।

अहंकार में तीनों गये, धन-वैभव व वंश।
न मानो तो देख लो, रावण-कौरव-कंस॥

जो स्वार्थ बुद्धि होते हैं, वे केवल अपना स्वार्थ करने के दूसरा कुछ भी नहीं जानते मानते। क्योंकि जिधर गफ्फा अच्छा मिले वहीं चले जाएँ। तो मिथ्या न रोकी जाये तो संसार में बहुत से अनर्थ प्रवृत्त हो जायें।

जब पापियों के पाप कर्म को रोकने वाला कोई नहीं होता तो बहुत से लोग पाप करने लग जाते हैं। (महाभारत)

विचार क्या है?

एक दिन श्मशान भूमि के वन में एक राहगीर जा रहा था। वहाँ कुछ फासले से एक मुर्दे की खोपड़ी पड़ी थी। राहगीर की उस पर ठोकर लग गई। वह खोपड़ी बोली-''ओ जाने वाले, ओ प्यारे होश में चल। मैं भी कभी शाही दबदबा रखती थी। मेरे ऊपर भी कभी ताज था। विजय मेरे

पीछे-पीछे चलती थी कि एक दिन सब समाप्त हो जाएगा, जो बनाया था, इकट्ठा किया था, सब टूट जाएगा। कीड़े मुझे खा जायेंगे और हर कोई मुझे ठोकर मारकर चलेगा। ओ भोले तू भी अपने कान से गफलत की रूई निकाल दे ताकि तुझे मुर्दों की आवाज सुनाई देने लगे और तुझको कुछ ज्ञान प्राप्त हो सके।''

सैर करने वाले राहगीर के मुंह से निकल पड़ा-

सैर करने मैं चला दिल में कुछ अरमान थे।
वक्त था शाम का सामने श्मशान थे।
पैर तले एक हड्डी दबी, हड्डी के यों ब्यान थे।
चलने वाले संभलकर चल, हम भी कभी इंसान थे।

सार-महाराणा युधिष्ठिर ने कहा था कि संसार में सबसे बड़ी आश्चर्य की बात यही है कि हम हमेशा दूसरों को मरता हुआ देखते हैं और अपनी मौत को याद नहीं करते हैं।

अब्दी नींद

किसी दिन देख लेना तुझको ऐसी नींद जायेगी।
तू सोया फिर न जागेगा न दुनिया ही जगायेगी।
तुझे संसार के खूंटे से जिसने बांध रखा है,
तेरे सोते ही वह ममता की रस्सी टूट जायेगी।
तेरे घर वाले जिस सूरत से इतना प्यार करते हैं,
यही सूरत उन्हें फिर मृतक बन करके डरायेगी।
तेरी हस्ती को जिस खलखत ने पस्ती में गिराया है,
वही बेकार दुनिया तुझ को कन्धों पर उठायेगी।
तू आंखें फेरेगा तो दुनिया भी मुंह फेर जायेगी,
जो आंखों पर बिठाती थी वही आंखें दिखायेगी।
जो कहते थे मरेंगे साथ तो थोड़े कदम चलकर,
वह मोह मटकी भी तिनके तोड़ते ही टूट जायेगी।
जिन्हें समझा है अपना 'नत्थासिंह' वह तो लौटेंगे;
तेरी नेकी बदी ही अन्त तेरे साथ जायेगी।

दिल न लगाना इस दुनिया में, दुनिया आनी जानी है।
मोहमाया और रूप सुन्दरता, हर चीज यहाँ रह जानी है॥
कोई इस दुनिया में रहा नहीं, आये और सारे चले गये।
हाथ बांधकर आये थे और हाथ पसारे चले गये॥
दो दिन का है मेला प्यारो, कुछ दिन और जिन्दगानी है।
दिल न लगाना इस दुनिया में, दुनिया आनी जानी है॥
खाली हाथ तू आया बन्दे, खाली हाथ तू जायेगा।
महल अटारी सब धन-दौलत, धरा यही रह जायेगा॥
ओ३म् नाम तू जप ले बन्दे, पार उतारण वाणी है।
दिल न लगाना इस दुनिया में, दुनिया आनी जानी है॥
जिसने किये शुभकर्म जग में, सो तन मुक्ति पाई है।
विषयों के चक्कर में तूने, क्यों यह उमर गंवाई है॥
लाख यत्न कर बचने का तू, मृत्यु फिर भी आनी है।
दिल न लगाना इस दुनिया में, दुनिया आनी जानी है॥

ओ रे माटी के पुतले न इतरा के चल,
तेरे जीवन का कोई भरोसा नहीं।
बूंद पानी की पड़ते ही गल जायेगा,
कच्चे बरतन का कोई भरोसा नहीं॥
सारा संसार सागर है स्वार्थ भरा,
इसके लालच में हरगिज दीवाना न हो।
गैर तो गैर अपने भी देंगे दगा,
दोस्त दुश्मन का कोई भरोसा नहीं॥
मेरा-मेरा न कर कोई तेरा नहीं,
चार दिन का जग का बसेरा नहीं।
कब पिंजरे का पक्षी निकल जायेगा,
बोलते तन का कोई भरोसा नहीं॥
माया ठगनी है नखरे दिखाती फिरे,
मोहमाया में सबको रिझाती फिरे।
जाने कितने घरों को किया है भस्म,
ऐसी माया का कोई भरोसा नहीं॥
मान ले तू मेरा दीवाने कहा,
मोक्ष चाहे तो हरि से लगा ले लगन।
फिर यह अवसर दोबारा मिले न मिले,
काया कंचन का कोई भरोसा नहीं॥
ओ रे माटी के पुतले न इतरा के चल,
तेरे जीवन का कोई भरोसा नहीं।
बूंद पानी की पड़ते ही गल जायेगा,
कच्चे बरतन का कोई भरोसा नहीं॥

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये।

पंजाब में आर्यसमाज

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

स्वामी विरजानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, स्वामी धर्मानन्द, पं० लेखराम, पं० आर्यमुनि, पं० चमूपति, वीर शहीद घुन्नासिंह आदि आर्य विभूतियों

के बारे पढ़कर, पंजाब सभा के गौरवशाली इतिहास के बारे में पढ़कर जो श्रद्धा के संस्कार बने थे, उनकी परिणति इस ग्रीष्मावकाश में पंजाब के कुछ गाँव में वेदप्रचार के रूप में हुई। परिस्थितिवश यह चार दिन-रात का कार्यक्रम था। यह कार्यक्रम ऐसा था कि इसमें यात्रा-वृत्तान्त में लिखी जाने वाली क्षेत्र की प्राकृतिक दशाएँ, भोजन, कठिनाइयाँ आदि प्रकरणान्तर व थोथी-सी प्रतीत होती हैं, अत: केवल प्रचार के बारे में लिखना ही स्वाभाविक लग रहा है।

सबसे पहले राजपुरा आर्यसमाज पहुँचे, जहाँ पं० चमूपति की यादें जुड़ी हैं। यहाँ के पुरोहित श्री ब्रह्मदत्त जी से परिचय हुआ। दोपहर के समय ये हमारे साथ आस-पास के घर-घर घूमे व शाम को 40-50 की उपस्थिति में बड़ा ही प्रेरणादायक प्रचार रहा। समाज के अधिकारियों से भी आत्मीय परिचय हुआ। राजपुरा के बाद लुधियाना पहुँचे। लुधियाना आर्यसमाज के पुरोहित ने कन्या गुरुकुल लुधियाना में प्रचार का कार्यक्रम रखा। उसी शाम युवा शहीद क्रान्तिकारी करतारसिंह सराभा के गांव सराभा में प्रचार किया। वहाँ दो युवाओं से सम्पर्क नंबर लेन-देन व भविष्य में मिलने तक की योजना सम्बन्धी सफलता मिली। उपस्थिति अच्छी थी।

उसके बाद वीर चिरंजी की जन्मभूमि राही ग्राम पहुँचे। इन्होंने स्वरचित भजनों के माध्यम से नशा, अन्धविश्वासों को मिटाने के लिए अनेक पीड़ाएँ व अपमान सहकर भी प्रचार किया था। लेकिन आज दुर्भाग्य कि इनके गाँव में इन्हें कोई नहीं जानता। हमने जीतोड़ कोशिश की, लेकिन लोग बैठने के लिए तैयार नहीं हुए। ऐसे समय हमने स्वयं ही लोगों को घूम-घूमकर इस सम्बन्ध में जानकारी दी। एक वृद्ध मिले, जिन्हें आर्यसमाज का प्रधान बताया गया। वे भी इस इतिहास से अनभिज्ञ ही मिले। हमने देखा कि उनके परिवार में हमारी उपस्थिति से ही उनके प्रति उपेक्षा के भाव बढ़ गये हैं। वृद्ध ने नवांशहर आर्यसमाज के एक अधिकारी से हमारी बात कराई, लेकिन वे महाशय भी बड़ी चतुराई से अपना पिण्ड छुड़ा गए। इसके बाद हम जालंधर आर्यसमाज में रात को विश्राम के बाद आर्यसमाज के लौहपुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की जन्मभूमि मोही गांव प्रात: ही पहुँच गए। पता पूछकर उनके नाम से चलने वाले नि:शुल्क औषधालय में पहुँचे। औषधालय अभी बन्द था। सामने घर से एक बहन निकलकर आई व हमारा परिचय पाकर खुशी से भर गई। उनकी खुशी का कारण यह निकला कि वह स्वयं सुन्दरपुर (रोहतक) हरियाणा की बेटी है। उनके श्वसुर श्री दलीपसिंह अध्यापक थे। पंजाब में नौकरी के चलते वहीं बस गए। इसी औषधालय में वैद्य रूप में भी सेवा दी। इनके पति ने भी यहाँ वैद्य रूप में सेवा दी। उन दोनों का अब निधन हो चुका है। इनका बेटा विदेश में है। इस बहन ने वैद्य जी से मिलकर 25-30 व्यक्तियों को एकत्रित किया। यज्ञ व प्रचार हुआ। यज्ञ के पश्चात् बड़ा ही आत्मीय वातावरण बन गया। बाद में स्वामी स्वतन्त्रानन्द के दोहते जो जालंधर में वकालत करते हैं, वे भी सूचना मिलने पर आए। उन्होंने वार्तालाप के दौरान बताया कि इस ट्रस्ट को 2000/- मासिक पंजाब सभा की ओर से मिलते थे, जो अब बन्द कर दिए गए हैं, इसके अतिरिक्त लाखों रुपये की स्थिरनिधि पर भी सभा का ही अधिकार है। इतना तो हमने अवश्य देखा कि ये गाँव बड़े-बड़े आर्यसमाजों, समृद्ध संस्थाओं के पास होने पर भी, उनकी पहुँच से दूर है। हमने स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के गाँव में प्रचार की, प्रेरणा व सन्देश बार-बार याद आता है। गाँव में जो समाज, संस्था, सभा प्रचार के लिए नहीं पहुँचते, वे मृत नहीं तो और क्या हैं?

क्रमश: अगले अंक में....

अदृश्य बन्धन

❑ यश वर्मा, मन्त्री आर्यसमाज, मॉडल टाउन, यमुनानगर 9416446305

वेद का एक मन्त्र है-

ओ३म् सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते।
त्वामभि प्रणोनुमो जेतारमपराजितम्॥

इस मन्त्र का अर्थ है-"हे बलों के भण्डार हम आपकी मित्रता को पाकर सदा बलवान बने रहें और कभी भी किसी से न डरें। प्रभु हम आपको बारम्बार प्रेमभरा नमस्कार करते हैं। आपकी कृपा से हमें सदैव विजय मिले, पराजय कभी नहीं।" इस मन्त्र में विशेष बात आई है कि हम कभी किसी से डरें नहीं। अरे भई डरें कैसे नहीं, सैकड़ों हजारों वर्षों से हमारे ग्रन्थों में लिख दिया गया और पंडितों और ज्योतिषियों ने स्वार्थवश खूब प्रचारित व प्रसारित किया कि इन बातों को नहीं मानोगे तो आपका अनिष्ट हो जाएगा, घोर अनर्थ हो जाएगा, नर्कों में जाओगे। हमें करोड़ों मील दूर जो ग्रह नक्षत्र हैं उनसे डराया गया, राशियों से डराया गया, यहाँ तक कि बिल्ली से डराया गया, अदृश्य रस्सियों से बांध दिया गया।

एक कथानक है कि कुछ व्यक्ति 100 ऊँट एक स्थान से दूसरे स्थान पर लेकर जा रहे थे। अपने गन्तव्य पर पहुँचने से पहले रात्रि का समय होने लगा तो उन्होंने सोचा कि कहीं रुकना पड़ेगा। इतने में उन्हें एक धर्मशाला नजर आई। उन्होंने धर्मशाला के मालिक से ठहरने की अनुमति मांगी। धर्मशाला के मालिक ने कहा, आप यहाँ रात्रि विश्राम करें व अपने ऊँट बाहर बांध दें। जब वे ऊँट बांधने लगे तो एक खूंटा व रस्सी कम पड़ गई। धर्मशाला मालिक से एक खूंटा व रस्सी मांगी। उसने कहा मेरे पास खूंटा व रस्सी नहीं है। ऊँट वालों ने सोचा कि अब रात्रि को जागना पड़ेगा अथवा एक ऊँट भाग जायेगा। तब धर्मशाला के मालिक ने उपाय सुझाया कि आप इस ऊँट को बांधने का नाटक करो जिससे इस ऊँट को लगे कि उसे बांध दिया गया है। उन्होंने ऐसे ही किया। धरती पर 4-5 हथौड़े मारे जिससे लगा कि खूंटा गाड़ दिया है। फिर उन्होंने जैसे रस्सी बांधते हैं, ऐसे दो चार बार हाथ घुमाया और ऊँट को बैठने का इशारा किया। ऊँट बैठ गया। प्रात:काल प्रात:काल ऊँट उन्हें वहीं मिला। जब सारे ऊँट खोलकर खूंटे निकालकर वे चलने लगे तो वह ऊँट उठे ही नहीं। वे धर्मशाला मालिक के पास गये और कहा कि आपने क्या जादू किया कि वह ऊँट तो उठता ही नहीं। तब उसने कहा कि तुमने उस ऊँट को रात को आपने बांधा था, अब उसे खोलो तभी वह उठेगा। वे कहने लगे कि हमने तो उसे बांधा ही नहीं, खोले कैसे? धर्मशाला मालिक ने कहा जैसे हाथ घुमाकर बांधा था वैसे ही खोलो। उन्होंने वैसा ही किया तो झट से ऊँट खड़ा हो गया। हमारा भी कुछ ऐसा ही हाल है। हमें भी माता-पिता, समाज, पण्डित, गुरुजन द्वारा कुछ ऐसे बन्धनों से बांध दिया गया है जो अदृश्य हैं। परन्तु यह अदृश्य बन्धन रस्सी तो क्या लोहे की जंजीरों से भी अधिक मजबूत हैं। हमारे मस्तिष्क में हजारों वर्षों से बिठा दिया गया है कि यदि ऐसा नहीं करोगे तो कुछ अनिष्ट हो जाएगा। यदि डरते-डरते कुछ ऐसा कर भी दिया, उन मान्यताओं के विपरीत तो अनिष्ट हो ही जाता है, क्योंकि जो कार्य भयभीत मन से करेंगे वह ठीक हो ही नहीं सकता।

एक व्यक्ति एक महात्मा जी के पास गया व अनुरोध करने लगा कि मुझे परमात्मा को पाना है। मुझे कोई उपाय बताइए। महात्मा जी ने कहा कि यह कोई आसान कार्य नहीं है आप घर जाइए और सुखपूर्वक रहिए। वह व्यक्ति कहने लगा कि मुझे तो परमात्मा को पाने का उपाय बताइए। मैं सब कष्ट सहने को तैयार हूँ। महात्मा ने कहा कि जंगल में जाओ और इस आसन पर बैठकर साधना करो। यह अभिमन्त्रित आसन है। पर किसी मनुष्य, पशु आदि से भय मत करना। वह जंगल में गया और उस आसन पर बैठकर साधना करने लगा। कई जंगली जानवर आए, सिंह भी आया चले गए। प्रारम्भ में उसे भय लगा, फिर धीरे-धीरे भयरहित होने लगा। उस व्यक्ति की बहुत प्रसिद्धि हो गई कि यह तो शेर, चीते आदि जंगली जानवरों से भी नहीं डरता। अब इस व्यक्ति के पास एक शिष्य आया और प्रार्थना की कि मुझे ईश्वर को पाना है। पहला व्यक्ति कहता है कि किसी चीज से, पशु से डरना नहीं है। शिष्य कहता है नहीं डरूँगा। इतने में एक शेर दौड़ता हुआ नज़र आ गया और गुर्राता हुआ चला गया। शिष्य की तो सांस थमने लगी। घबरा गया बुरी तरह। गला रुंध गया। पानी मांगा, पहला व्यक्ति पानी लेने जाने लगा और शिष्य उसके आसन की ओर बढ़ने लगा। यह देखकर पहला व्यक्ति घबराकर, भागकर अपने आसन की ओर लपका कि कहीं यह आसन को न उठा ले अथवा मेरे आसन की शक्ति समाप्त न हो जाए। यह देखकर शिष्य हँसने लगा और कहता है कि आप तो मेरे से भी अधिक भयभीत हो। यह कहकर वह लौट गया। जो व्यक्ति शेर व जंगली जानवरों ने नहीं डर रहा था वह भी अदृश्य बन्धन से भय से मुक्त नहीं था।

कुछ प्रत्यक्ष भय हैं, जो स्वाभाविक हैं। जैसे शेर, जंगली जानवर, कुत्ता, गाय, बैल के सींग आदि से डर। सड़क पर तेजी से आते ट्रक, बस, कार से डरकर अपने आपको बचाना समझदारी है। दुष्ट व्यक्ति, दुष्ट संगत से बचकर रहना भी बुद्धिमानी है। दूसरे परोक्ष भय है जिन पर हमें विचार करना चाहिए, मनन करना चाहिए। कुछ वस्तुओं में हम अपनी हानि मान लेते हैं व दुःखी होकर अपना आपा खो देते हैं। एक व्यक्ति ने कार ली। बहुत ध्यान रखता था कार का। बस भय था कि कार की कोई हानि न कर दे। एक दिन उसके लड़के ने कार पर स्क्रैच मार दिए किसी लोहे के टुकड़े से। अब इस व्यक्ति को इतना क्रोध आया कि लड़के को जोरदार चांटा मारा और लड़का बेहोश हो गया। अब उसे कार की हानि भूल गई। वह तेजी से अपने बच्चे को डॉक्टर के पास ले गया और बोला कार, कोठी सब ले लो पर मेरे लाल को ठीक कर दो। उसे अब बड़ी हानि का भय सता रहा था।

वैसा देखा जाये तो बड़ी हानि छोटी हानि कुछ नहीं है। सब हमारे विचारों पर निर्भर करता है। यदि प्रभु पर विश्वास है तो बड़ी से बड़ी हानि भी राई के दाने के समान लगती है। एक ही प्रकार की हानि या अवस्था के दो व्यक्ति बराबर दुःखी नहीं होते। एक अधिक और एक कम दुःखी होता है। यदि योगी है तो दुःखी होता ही नहीं है, क्योंकि उसे किसी प्रकार का भय नहीं होता।

एक व्यक्ति चाय का प्याला लेकर खड़ा है। घर में बच्चे का व अन्य सदस्य का धक्का लगा और चाय उसके कपड़ों पर गिर गई। क्योंकि उसके प्याले में चाय थी इसलिए गिरी। हम सदैव क्रोधरूपी चाय अपने प्याले में लेकर घूमते हैं। यदि चाय ही न हो तो गिरेगी कैसे। हमारे प्याले में यदि प्रेम होगा तो प्रेम छलकेगा न कि क्रोध। हम प्राय: कहते हैं कि पत्नी, पति, बच्चे, पड़ोसी अथवा दूसरे लोग हमें क्रोध करवाते हैं। अरे भई! प्याले में प्रेम रखो न, क्रोध क्यों रखते हो। महर्षि दयानन्द जी नेजहर देने वाले को भी पैसे देकर भाग जाने के लिए कहकर प्रेम ही तो दर्शाया था।

हम अदृश्य बन्धनों/रस्सियों पर विचार करें, भय न करें। वहम न पालें कि ग्रह हमारा कुछ बिगाड़ देंगे। बिल्ली के रास्ते काटने या किसी की छींक से अथवा कांच का गिलास टूटने से कुछ अनिष्ट हो जाएगा। बेमतलब के चक्करों में पड़कर भीरू न बनें। हाँ, प्रत्यक्ष भय से अवश्य सावधान रहें व अपने को हानि से बचाएं। क्रोध व भय न करते हुए श्री कृष्ण जी द्वारा बताये हुए समत्व योग का पालन करो। जीवन में समभाव रखते हुए सुखी रहें।

श्री सुभाष जी को पितृशोक

वेदप्रचार मण्डल रोहतक के प्रधान श्री सुभाष सांगवान के पूज्य पिताश्री एवं आर्यसमाज के अत्यधिक कर्मठ अनुयायी एवं ऋषि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त तथा हर पल परमपिता परमेश्वर से जुड़े रहने वाले श्री प्रतापसिंह शास्त्री सुपुत्र श्री अमरसिंह वैद्य गांव नूरनखेड़ा (सोनीपत) का दिनांक 29 मई 2018 को 96 वर्ष की

आयु में प्रात: 3.45 पर स्वर्गवास उनके निवास स्थान तिलकनगर रोहतक पर हो गया। 29 मई 2018 को प्रात: 11 बजे शीला बाईपास रामबाग में वैदिक विद्वानों द्वारा मन्त्रोच्चार के साथ उनका अन्तिम संस्कार हजारों व्यक्तियों की उपस्थिति में किया गया। वे अध्यापक के कार्य से सेवानिवृत्त होकर वैदिक मान्यताओं के प्रचार-प्रसार में जुट गये और 1981 से रोहतक में निवास करने लगे। उनमें यज्ञ करने और कराने में बड़ी रुचि थी। वे बड़ी लगन से पांच महायज्ञों का प्रचार करते थे। उन्होंने रोहतक शहर, सैक्टरों और कई आस-पास के गांवों में यज्ञ-हवन की सुन्दर परम्परा को दोबारा से प्रारम्भ किया। वे वैदिक संस्कारों पर बड़ा जोर देते थे, वैदिक साहित्य बांटते थे तथा 'ओ३म्' का जाप करने की आवश्यकता सभी मनुष्यों के लिए बताया करते थे। हजारों परिवारों को वैदिक यज्ञ परम्परा से जोड़ा। लगभग 32 वर्ष तक यह महान कार्य किया। इसके अतिरिक्त सामाजिक कार्यों में बड़े उत्साह से भाग लेते और दूसरों को भी बेबाक होकर प्रेरित करते रहते थे। वे अपने शरीर के स्वास्थ्य के प्रति बड़े जागरूक थे। 96 वर्ष की आयु तक भी उन्होंने कभी किसी का सहारा नहीं लिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उनके आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट करती है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि पवित्र दिवंगत आत्मा को सद्गति देवे एवं आर्य परिवार को इस विकट दुःख को सहन करने की शक्ति देवे।

-सत्यवान आर्य, सहायक कार्यालयाधीक्षक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा आयोजित आर्य वीर दल का प्रदेश स्तरीय शिविर का शुभारम्भ

रोहतक। दिनांक 3 जून 2018 को दयानन्दमठ रोहतक में होने वाले मासिक वैदिक सत्संग वाले दिन डॉ. देवव्रत आचार्य महामहिम राज्यपाल हिमाचल प्रदेश की अध्यक्षता में मुख्य अतिथि श्री मनीष ग्रोवर सहकारिता मंत्री हरियाणा सरकार ने ओ३म् ध्वज फहराकर आर्य वीर दल के शिविर का उद्घाटन किया।

डॉ० देवव्रत आचार्य महामहिम राज्यपाल हिमाचल प्रदेश द्वारा बनवाये गये चार वेदप्रचार रथ आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को भेंट किया गया और उनमें से एक रथ की चाबी वेदप्रचार मण्डल रोहतक के प्रधान श्री सुभाष सांगवान तथा मन्त्री श्री रोशनलाल आर्य एवं उनकी कार्यकारिणी को सौंपी गई तथा महामहिम राज्यपाल द्वारा एक रथ की चाबी वेदप्रचार मण्डल सोनीपत को सौंपी गई। महामहिम ने सार्वजनिक रूप से घोषणा की कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा वेदप्रचार में और अधिक गति लाई जायेगी। यदि और भी रथों की आवश्यकता हुई तो अगले वर्ष और भी रथ भेंट किये जायेंगे। सभा के इस रथ पर उपदेशक एवं भजनोपदेशक वेदप्रचार अभियान में युद्ध स्तर पर लगाये जायेंगे। इसके लिए गुरुकुल कुरुक्षेत्र ने एक करोड़ रुपये का बजट पास कर रखा है। इस कार्य के लिए सभा को काफी सहयोग किया जाएगा।

50 करोड़ गबन की जांच का केस आचार्य विजयपाल पक्ष ने वापस उठाया एवं रणवीर सिंह पानीपत का भी आरोप रद्द किया गया

वहीं, 8 अप्रैल को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की बैठक में पास प्रस्तावों की अनियमितताओं व मास्टर रामपाल पर लगाये गए 50 करोड़ रुपये गबन के आरोपों की जांच करवाने के मामले में नया मोड़ आ गया है। इस मामले में आरोप लगाने वाले पूर्व सभाप्रधान आचार्य विजयपाल ने जिला रजिस्ट्रार के पास दाखिल किए केस को वापस उठा लिया है। उनकी ओर से इस मामले में जांच की मांग की गई थी। इसकी पुष्टि स्वयं आचार्य विजयपाल ने भी की है। केस वापस लेने के साथ ही अब आचार्य विजयपाल ने अपने बयान से भी इंकार कर रहे हैं। मास्टर रामपाल आर्य ने बताया कि आचार्य विजयपाल की ओर से केस डालते ही उनकी ओर से 18 मई को सभा कार्यकारिणी की आपात बैठक बुलाई और उसमें जांच कराने का एजेंडा डालकर जिला रजिस्ट्रार के सामने प्रस्ताव पास की कॉपी पेश कर दी। चूंकि इस मामले में आर्य जनता के सामने सच्चाई सामने आनी चाहिए थी। इसी दिन जब मीटिंग के बाद दोपहर के बाद 3 बजे जब जिला रजिस्ट्रार के पास पेशी पर गए तो उनकी ओर से केस उठाने की दरखास्त उनके वकील की ओर से पेश की और केस वापस ले लिया गया था। (दैनिक भास्कर, 1.6.18)

पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए मा. रामपाल आर्य।

जांच से पहले ही उठाया केस : रजिस्ट्रार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में आचार्य विजयपाल के वकील की ओर से 50 करोड़ के गबन की जांच करवाने का केस डाला गया था। जब इसमें जांच करनी शुरू की गई तो उनके वकील ने इसे वापस ले लिया।
—राजेश खेड़ा, जिला रजिस्ट्रार रोहतक

कभी नहीं लगे ऐसे आरोप

मैंने सोलह वर्ष की आयु में छात्र संगठन से काम करना शुरू किया। अब 70 वर्ष तक कभी ऐसा घटिया आरोप नहीं लगा। इस आरोप से थोड़ी पीड़ा जब हुई कि आर्यसमाज तो समाज को सत्य का मार्ग दिखाती है। खेद की बात है कि संस्था के कर्णधार ही झूठ का सहारा लेने लग गए हैं। —मा. रामपाल आर्य, सभाप्रधान

हां, केस वापस ले लिया

जब 50 करोड़ के गबन के आरोप में सभा के पूर्व प्रधान आचार्य विजयपाल से पूछा गया तो उन्होंने कहा कि हाँ उनकी ओर से केस वापस ले लिया गया है।

दयानन्दमठ रोहतक में लगा आर्य वीर दल शिविर, हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल डॉ. देवव्रत आचार्य ने की शिरकत

समाज को डेरों के चंगुल से बचाएं आर्यसमाज के लोग दयानन्द मिशन पर खर्च होंगे एक करोड़ रुपये : राज्यपाल

रोहतक। हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल डॉ. देवव्रत आचार्य का कहना है कि आर्यसमाजी आम लोगों को डेरों के चंगुल में फँसने से बचाएँ। टीवी पर प्रवचन व

हाथ की रेखाएं देखकर भविष्य बताने वाले लोगों को अकर्मण्य बना रहे हैं। ऐसे में आर्यसमाज की भूमिका पहले ज्यादा बढ़ गई है। दयानन्द मिशन के तहत आर्यसमाज एक साल में एक करोड़ रुपये वेदों के प्रचार पर खर्च करेगा। राज्यपाल रविवार को दयानन्दमठ रोहतक में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा आयोजित आर्य वीर दल शिविर में युवाओं को सम्बोधित कर रहे थे।

राज्यपाल ने कहा कि हरयाणा आर्यसमाज का गढ़ रहा है, उसमें भी रोहतक, सोनीपत व झज्जर में आर्यसमाज का काफी प्रभाव रहा। रोहतक के अन्दर सबसे आखिर में सिनेमा हॉल खुला था, लेकिन आर्यसमाज उतनी भूमिका समाज के अन्दर नहीं निभा सका, जो निभानी चाहिए थी। अब दोबारा आर्यसमाज ने स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं व वेदों का प्रचार-प्रसार का बीड़ा उठाया है। अब आर्यसमाजी जब गांवों में जाते हैं तब बुजुर्ग पूछते हैं कि आर्यसमाजियों कहाँ चले गये थे, समाज को संभालना ही छोड़ दिया। अब ऐसा नहीं होगा। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का मुख्य उद्देश्य आर्य वीर दल की शाखाओं को बढ़ाना और उन्हें गति प्रदान करना है। यह कार्य किसीभी सूरत में कमजोर नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि सभा को चार रथ वेदप्रचार के लिए भेंट किये जा रहे हैं। अगले वर्ष चार और रथ प्रदान किये जायेंगे। यदि और रथों की भी आवश्यकता पड़ी तो वे भी मुहैया करवाये जायेंगे। उन्होंने कहा कि युवाओं को विद्वान् बनने का प्रशिक्षण देने के लिए कुरुक्षेत्र गुरुकुल में भेजना चाहिए।

मोबाइल और टीवी से हटाकर बच्चों को खेल के मैदान में भेजें-सहकारिता मंत्री मनीष ग्रोवर

वहीं, सहकारिता मंत्री मनीष ग्रोवर ने कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा जीवन को चलाने, अच्छा आचरण बनाने और समाज को आगे बढ़ाने का कार्य किया जा रहा है। अभिभावकों को चाहिए कि वे अपने बच्चों को मोबाइल और टीवी से हटाकर खेल के मैदान में भेजें। इस मौके पर सभा के प्रधान मास्टर रामपाल आर्य, स्वामी धर्मदेव, स्वामी देवव्रत, आर्य सभा दिल्ली के महामन्त्री विनय आर्य, उमेद शर्मा, आचार्य सर्वमित्र आर्य, रमेश आर्य, उदयभान शास्त्री, आईएएस आरसी विधान भी मौजूद रहे। (अमर उजाला, 4.6.18)

अच्छे संस्कारों से होगा अच्छे समाज का निर्माण : डॉ बलदेव

गुरुकुल में आर्य वीरांगना योग एवं जीवन निर्माण शिविर का भव्य समापन, 1250 युवतियों ने लिया प्रशिक्षण

कुरुक्षेत्र। 11 जून 2018 : गुरुकुल कुरुक्षेत्र में महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी की प्रेरणा से लगाये गये आर्य वीरांगना योग एवं जीवन निर्माण शिविर का आज भव्य समापन हुआ।

समापन समारोह में आयूष विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बलदेव मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे जबकि समारोह की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के मंत्री उम्मेद शर्मा द्वारा की गई। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान मा. रामपाल आर्य एवं वैदिक विद्वान् डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, सह प्राचार्य शमशेर सिंह समारोह में मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

समारोह को सम्बोधित करते हुए डॉ. बलदेव ने कहा कि अच्छे संस्कारों से ही अच्छे समाज का निर्माण होता है और जब समाज अच्छा होगा तो निश्चय ही हमारा राष्ट्र एक उन्नत राष्ट्र बनेगा। इस कार्य में महिलाओं की भूमिका बहुत अहम् है, क्योंकि महिलाएं ही अपने बच्चों व परिवार को अच्छे संस्कार देकर उन्हें सभ्य नागरिक बनाती हैं। शिविर में आयीं 1250 युवतियों को सम्बोधित करते हुए डॉ. बलदेव ने कहा कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है, अतः जब तक हमारा शरीर स्वस्थ और बलिष्ठ नहीं होगा, उसमें अच्छे विचार कैसे आएंगे? उन्होंने सभी युवतियों को शिविर में मिले प्रशिक्षण और बौद्धिक ज्ञान का विस्तार करने का आह्वान किया और अन्य लोगों को भी इसका लाभ देने की प्रेरणा दी। डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार ने आर्य वीरांगनाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि दुनिया में विचार से बड़ा कोई खजाना नहीं होता। जिनके विचार अच्छे और श्रेष्ठ है, उनके लिए जीवन में कुछ भी असम्भव नहीं होता, सफलता उनके कदम चूमती है। उन्होंने युवतियों से कहा कि यह आपका सौभाग्य है कि इस शिविर में आकर आपको ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के उन्नत विचारों का स्मरण करने का अवसर मिला है, अब आपका दायित्व है कि इन विचारों का अधिक से अधिक विस्तार कर समाज का कल्याण करो।

समारोह को आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान मा. रामपाल आर्य व मंत्री उम्मेद शर्मा ने भी सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा वेदप्रचार के क्षेत्र में जितना कार्य किया जा रहा है, पूरे देश में अन्य किसी संस्था द्वारा नहीं किया जा सकता। गुरुकुल कुरुक्षेत्र ने समाज को नई दिशा व दशा देने के लिए एक आदर्श स्थापित किया है। अन्त में गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, सह प्राचार्य शमशेर सिंह व डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार ने आए हुए मुख्य अतिथि डॉ. बलदेव एवं उम्मेद शर्मा को शॉल व स्मृति-चिह्न देकर सम्मानित किया। मंच संचालन शिविर अध्यक्ष नन्दकिशोर आर्य द्वारा किया गया।

हर्षोल्लास के साथ किया शिविर का समापन

रोहतक। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा आयोजित प्रान्तीय आर्य वीर दल हरयाणा का शिविर दिनांक 03 जून से 10 जून 2018 तक दयानन्दमठ रोहतक में आयोजन किया गया था, जिसका समापन दिनांक 10.06.2018 को किया गया। हरियाणा सरकार के सहकारिता मन्त्री श्री मनीष ग्रोवर ने ओ३म् का ध्वज फहराते हुए आर्य वीर दल हरियाणा स्तर के शिविर का विधिवत् उद्घाटन किया। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल डॉ० देवव्रत आचार्य ने की और उन द्वारा सभा को चार वेदप्रचार रथ 28 जनवरी 2018 को आचार्य बलदेव जी की स्मृति दिवस पर देने की घोषणा की थी, वे बनकर आ गए हैं। उनमें से एक वेदप्रचार रथ अपने करकमलों द्वारा वेदप्रचार मण्डल रोहतक के प्रधान श्री सुभाष आर्य, मन्त्री श्री रोशनलाल आर्य, संरक्षक श्री सुरेन्द्र दहिया तथा पदाधिकारियों को उसकी चाबी देकर भेंट किया। मंच का संचालन आर्य वीर दल प्रदेशाध्यक्ष व सभामन्त्री श्री उमेद शर्मा ने किया। आर्य वीर दल के इस शिविर में लगभग 500 युवाओं ने भाग लिया। आर्य वीर दल शिविर की उस समय शोभा और बढ़ गई जब इस अवसर पर राष्ट्रीय आर्य वीर दल के संचालक स्वामी देवव्रत जी व उनके साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी भी पधार गए। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के साथ युवाओं को जोड़ने के लिए पूरे प्रदेश में अबकी बार 36 आर्य वीर दल के शिविरों का आयोजन किया है। मा० रामपाल आर्य ने बताया कि अब पूरे प्रदेश में इन 14 वेदप्रचार रथों के द्वारा वेदप्रचार किया जायेगा। इन वेदप्रचार वाहनों में मंच, माईक व लाईट की व्यवस्था है। प्रत्येक रथ के साथ एक भजनमण्डली व एक उपदेशक प्रचार के लिए भेजा जाएगा।

शिविर के उद्घाटन एवं समापन के अवसर पर सभा के संरक्षक स्वामी धर्मदेव जी, श्री कन्हैयालाल आर्य सभा-उपप्रधान, आचार्य सर्वमित्र आर्य सभा-प्रस्तोता, श्रीमती सुमित्रा आर्या सभा-कोषाध्यक्ष, श्री नरेन्द्र कटारिया एडवोकेट, डॉ० सुरेन्द्रकुमार संस्कृत विभागाध्यक्ष महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक, श्री रमेश आर्य सभा-वेदप्रचाराधिष्ठाता, आचार्य यशपाल, श्री जगदीश सींवर, श्री वेदप्रकाश आर्य, महामंत्री आर्य वीर दल हरयाणा अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

शोक-समाचार

(1) कर्मठ, कर्मयोगी, धुन के धनी, आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता महाशय सोहनलाल ग्राम चिमनावास जिला रेवाड़ी का स्वर्गवास 27 मई 2018 को हो गया, वे 105 साल के हो गये थे। उनकी उम्र का कोई क्षेत्र में नजर नहीं आता। आर्यसमाज बाछौद जिला महेन्द्रगढ़ एवं वेदप्रचार मण्डल महेन्द्रगढ़ (हरयाणा) के संरक्षक महात्मा विश्वमुनि ने वैदिक रीति से ब्रह्मा के पद पर होकर यज्ञ सम्पन्न करवाया जिसमें क्षेत्र के आर्यसमाजियों ने यज्ञ में आहुति डाली व एक मिनट का मौन रखा, नीरज शर्मा पुरोहित थे। वे भरा पूरा परिवार छोड़कर गये हैं। उनके 6 लड़के व 3 लड़की तथा पोता पड़ोती-पड़ोता हैं। बड़ा बेटा ओमप्रकाश सपत्नीक यजमान हुये व उनके पदचिह्नों पर चलने का संकल्प लिया। महाशय जी शरीर छोड़ने से पहले परिवार को कहा कि मेरा काज नहीं करना है, वैदिक रीति से यज्ञ रस्म करनी है। वही कार्य परिवार ने महात्मा विश्वमुनि संरक्षक वेदप्रचार मण्डल महेन्द्रगढ़ से सम्पन्न करवाया।

–महात्मा विश्वमुनि, संरक्षक आर्यसमाज बाछौद एवं वेदप्रचार मण्डल महेन्द्रगढ़ 9416885535

(2) आर्यसमाज बामडोला जिला झज्जर से सभा की प्रतिनिधि श्रीमती नारायणी के पतिदेव श्री हवासिंह आर्य का स्वर्गवास दिनांक 18 मई 2018 को 75 वर्ष की आयु में हो गया। वे अपने पीछे पूरा भरा परिवार छोड़ गए हैं। श्री हवासिंह आर्य श्रीमती वेदवती आर्या ग्राम मुरादपुर टेकना (रोहतक) के जीजा जी थे। वे आर्यसमाज के कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उनके आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट करती है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति देवे एवं व्यथित परिवार को इस विकट दुःख को सहन करने की शक्ति देवे। –उमेद शर्मा, सभामंत्री

प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर के समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए सभा संरक्षक स्वामी धर्मदेव।

प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर के समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए आचार्य प्रियेश।

प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर के समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए श्री श्रेयांस द्विवेदी।

प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर के समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए मुख्य व्यायाम शिक्षक श्री अनिल।

प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर के समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए शिविराध्यक्ष आचार्य सर्वमित्र आर्य।

प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर के समापन समारोह में आर्यवीर मनुदेव को सर्वश्रेष्ठ आर्यवीर पुरस्कार से सम्मानित करते हुए।

प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर के समापन समारोह में डा० सुरेन्द्र कुमार को सम्मानित करते हुए सभा पदाधिकारी।

प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर के समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए डा० सुरेन्द्र कुमार।

प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर के समापन पर अपनी मनोहक प्रस्तुति देते हुए आर्यवीर।

Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

"आर्य प्रतिनिधि" लौटाने का पता :

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

श्री ....

पता ....

....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

– सम्पादक उमेद शर्मा